अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

चाहे लोग आपको कितना भी अपमानित करें हों या आपके कितने भी दुश्मन हों — परमेश्वर उन्हें कभी उस तरह से घृणा नहीं करता जैसा आप करते हैं। जिस तरह आप उन्हें देखते हैं, वह तरीका परमेश्वर का नहीं है। आप उनकी विनाश की कामना कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर उनकी उन्नति चाहता है। आप चाह सकते हैं कि उन पर आपदा आए, परन्तु प्रभु चाहता है कि वे मन बदलें और संकट से बचें।

अगर आप वास्तव में परमेश्वर की प्रकृति को समझ लेते हैं, तो आप अपने शत्रुओं के लिए बुराई की कामना करना बंद कर देंगे। इसके बजाय आप प्रार्थना करेंगे कि प्रभु उन्हें पश्चाताप की कृपा दें, ताकि उनका नुकसान आपको न पहुंचे।

यदि आप यह प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर आपके शत्रुओं को मार दें — तो यह समय बर्बाद करना होगा। क्योंकि परमेश्वर जानता था कि वे आपके शत्रु बनेंगे — इससे भी पहले कि वे पैदा हों — और फिर भी उन्होंने उन्हें बनाया। यदि परमेश्वर उनसे उतनी ही क्रोध करता, जितना आप करते हैं, तो उन्होंने उन्हें बहुत पहले नष्ट कर दिया होता — या उन्हें बनाया ही नहीं होता। उनकी मौजूदगी यह दर्शाती है कि वे परमेश्वर की सार्वभौम योजना का हिस्सा हैं, और उन्होंने उन्हें इसलिए बनाया क्योंकि वे उन्हें प्रेम करते हैं (यूहन्ना 3:16)।

क्यों परमेश्वर विनाश नहीं, बल्कि पश्चाताप चाहता है

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

ये बातें कठिन हैं, फिर भी सत्य हैं। यदि आप किसी से इसलिए घृणा करते हैं कि उसने आपके बारे में गप्पें फैलाई हैं, और चाहते हैं कि परमेश्वर उसे मार दे — ऐसे प्रार्थना से कोई लाभ नहीं होगा। इसके बजाय प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें पश्चाताप का हृदय दें — क्योंकि वह यही चाहता है।

“क्या मैं दुष्ट के मरे जाने में प्रसन्न होता हूँ, बोलता है यहोवा ? क्या मैं अधिक यह न चाहूँगा कि वह अपने मार्गों से फिरकर जीवित हो जाए?” (हसेकिएल 18:23)

“प्रभु… यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, पर यह चाहता है कि सब लोग पश्चाताप करें।” (2 पतरस 3:9)

जब किसी ने आपके सबसे मूल्यवान वस्तु को छीन लिया हो, तब उस प्रार्थना को करना जो परमेश्वर को प्रिय हो, इस प्रकार है:

“पिता ! उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।” (लूका 23:34)

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

जब कोई आप पर जादू-टोना करके चोट पहुँचाने का प्रयास करता है, आप कह सकते हैं कि “तू जादूगरनी को जीवित न रहने दे” (निर्गमन 22:18) — लेकिन सोचिए: क्या आप उसी तरह “व्यभिचारियों को पत्थर वार करो” (व्यवस्था 22:22) को भी लागू करते हैं जब किसी को व्यभिचार करते पकड़ा जाए? यह वही परमेश्वर है जिसने दोनों आज्ञाएँ दी थीं। तो फिर एक को क्यों लागू करें और दूसरे को झुठलाएँ?

नए वाचा की दृष्टि

हमें यह समझना होगा कि पुराने वाचा में परमेश्वर का व्यवहार नए वाचा में उसके व्यवहार से भिन्न था। पुराने नियम में, क्योंकि मनुष्यों का हृदय कठोर था, इस्राएलियों को व्यभिचारियों, मूर्तिपूजकों, जादूगरों और अपमान करने वालों को दंड देने की अनुमति थी — लेकिन यह परमेश्वर की आखिरी योजना नहीं थी।

परमेश्वर की पूरी इच्छा ने येसु मसीह में रूप लिया, जिन्होंने कहा:

“तुमने सुना है कि कहा गया था … ‘हत्या न करो’। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो अपने भाई से क्रोधित होगा, वह न्याय का अधिकारी है।” (मत्ती 5:21-22)
“तुमने सुना है कि कहा गया था … ‘आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत’। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ: बुरे के विरुद्ध प्रतिरोध न करो; बल्कि यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो अपना दूसरा गाल भी मोड़ा दे।” (मत्ती 5:38-39) “तुमने सुना है कि कहा गया था: ‘अपने पड़ोसी से प्रेम रखो और अपने शत्रु से बैर करो’। पर मैं तुमसे कहता हूँ: अपने शत्रुओं से प्रेम करो और उन लोगों के लिए

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

प्रार्थना करो जो तुम्हें सताते हैं, ताकि तुम अपने पिता के सन्तान बनो जो स्वर्ग में हैं।” (मत्ती 5:43-45)

इसलिए, मसीही विश्वास में “आँख के बदले आँख” नहीं, व्यभिचारियों की पत्थरबाज़ी नहीं, जादूगरों की हत्या नहीं – इन बातों के लिए हमें अनुमति नहीं है। हमें न अपने शत्रुओं से घृणा करनी चाहिए। हमारी प्रार्थना यह होनी चाहिए कि परमेश्वर हमें उनके हानि से बचाए, उनकी दुष्ट योजनाएँ विफल करें और उन्हें पश्चाताप की ओर ले जाए।

हमारे पिता के समान बनना

हम परमेश्वर को बुराई करना नहीं सिखा सकते — वह पूर्ण है। वह अपने सूर्य को बुरों और भलों पर समान रूप से उगने देता है। हमसे कहा गया है:

“तुम दयालु हो, जैसे तुम्हारा पिता दयालु है।” (लूका 6:36)

येसु ने आगे कहा:

“यदि तुम उन लोगों से प्रेम रखते हो जो तुमसे प्रेम करते

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

हैं, तो तुम्हें क्या विशेष मिलेगा? … इसलिए तुम पूर्ण हो
जाओ, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता पूर्ण है।” (मत्ती
5:46-48)

उद्धार के लिए निमंत्रण

प्रभु हम सबको आशीष दें। यदि आपने अभी तक येसु को स्वीकार नहीं किया है — तो सोचिए, आप किसका इंतजार कर रहे हैं? सुसमाचार कोई मनोरंजन की कहानी नहीं है; यह एक प्रमाण है। जब भी आप इसे सुनते हैं, यह दर्ज होता है कि आपने सुना। इसे अनदेखा करना मतलब अपनी आत्मा को अनन्त संकट में डालना है।

आज ही मसीह को अपने जीवन में प्रवेश दीजिए। कल का इंतजार मत कीजिए — क्योंकि “तुम नहीं जानते कि कल क्या होगा” (नीतिवचन 27:1)। पवित्र बपतिस्मा लें — पूर्ण रूप से डूब कर (यूहन्ना 3:23) — येसु मसीह के नाम पर (प्रेरितों 2:38)। तब पवित्र आत्मा आप पर आएगा और आपको सारी सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा (यूहन्ना 16:13)।

मरन-आथा!

अपने शत्रुओं के लिए परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को समझें

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp